ISSN : 2582-6964

TPIJSSH

The Perspective

International Journal of Social Science and Humanities

An Online, Peer-Reviewed, Indexed and Refereed Journal

Volume: 3, Joint Issue: 9-11, February - October, 2022

Editor

Dr. Sunil Kumar 'Suman'

Co-Editor

Dr. Anish Kumar

Neetisha Khalkho

Rajaneesh Kumar Ambedkar

The Perspective

International Journal of Social Science and Humanities

An Online, Peer-Reviewed, Indexed and Refereed Journal
A Quarterly, Bi-Lingual Research Journal Published in English & Hindi
Volume: 3, Joint Issue: 9-11, February – October, 2022

Patron
Padma Shri Prof. Sukhadeo Thorat
Prof. Virginius Xaxa

Editor
Dr. Sunil Kumar 'Suman'

Associate Editor
Dr. Harish S. Wankhede

Co-Editor
Dr. Anish Kumar
Neetisha Khalkho
Rajaneesh Kumar Ambedkar

Editorial Board Members
Prof. (Dr.) Jiang Jingkui
Elmar Josef Renner
Prof. Shafique Ahmed
Dr. Ratan Lal
Dr. Santosh Kumar
Dr. Asha Singh
Dr. Ajeet Kumar Pankaj
Dr. Janardan Gond

Advisory Board Members
Dr. Rathnasiri Rathnayaka R. M
Ven. Marthuwela Vijithasiri
Dr. Surya Bali

Review Panel
Prof. Jai Kaushal
Dr. Bir Singh
Dr. Dinamani Bhim
Dr. Brahm Prakash
Dr. Purandara dass
Dr. Anuj Kumar
Saddam Hossain
Mritunjay Kumar Yadavendu
Dr. Ajay Kumar

Available online at: www.tpijssh.com Email: editor.tpijssh@gmail.com

The Perspective

International Journal of Social Science and Humanities

An Online, Peer-Reviewed, Indexed and Refereed Journal
Volume: 3, Joint Issue: 9-11, February – October, 2022
ISSN : 2582-6964

©Copyright all reserved
Cover Page and Layout designed by **Dr. Anish Kumar**

Editor's name & Editorial Address

Dr. Sunil Kumar 'Suman'
D-11, Shamsher Sankul
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya Campus
Wardha, Maharashtra
Post- Hindi Vishwavidyalaya, Pin code- 442001
Email - editor.tpijssh@gmail.com
Website- www.tpijssh.com

Table of Content

Volume: 3, Joint Issue: 9-11, February – October, 2022

Editorial		
1.	Editorial **Dr. Sunil Kumar 'Suman'**	v
Research Article		
2.	Importance of the Media Industry to Fulfill Economic Demand and Supply **Dr. Kamlesh Meena**	1-16
3.	Lack of Understanding of the Inscrutability of the Movement and the Collision of the Earth Plates Leading to the Formation of Himalayas in the Subject Geography among the Pupils of Class 8 : An Action Research **Dr. Amit Kumar**	17-28
4.	Securing the Forest Rights of Scheduled Tribes in Odisha : An Analysis on Implementation of Forest Rights Act, 2006 **Dr. Raj Kumar Khosla**	29-40
5.	Oral Tradition of the Ao's – A record of Time and History **Zulusenla**	41-58
6	दलित दृष्टि और हिन्दी आलोचना के प्रतिमान **डॉ. रामनरेश राम**	59-72
7.	निर्गुण भक्तिकाव्य में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना और भारतीय चिंतन परम्परा **डॉ. सविता**	73-77
8.	महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ करने में गांधी जी के विचारों एवं कार्यों का योगदान **प्रो. वन्दना सिन्हा**	78-82

The Perspective
International Journal of Social Science and Humanities
An Online, Peer-Reviewed, Indexed and Refereed Journal, ISSN: 2582-6964
A Quarterly, Bi-Lingual Research Journal Published in English & Hindi
Vol. : 3, Joint Issue : 9-11, February - October, 2022

Editorial

भारतीय परिदृश्य में साहित्य मानवीय मूल्यों को उद्घाटित करते हैं। मनुष्य के मन के भाव या विचार जब शब्द का रूप लेकर अभिव्यक्त होते हैं तो वह साहित्य कहलाता है। समाज में जो कुछ भी घटित होता है वह हमें साहित्य में मिल जाता है। मनुष्य ने समाज में रहने और जीवन जीने के लिए कुछ जीवन मूल्य विकसित किए है जो हमें एक दायरा प्रदान करते हैं और मानव में चिंतन शक्ति और बौध्दिक क्षमता को बढाते हैं। यही गुण हमें जानवरों से अलग और ज्यादा विकसित बनाते है। पर आधुनिक युग में बदलते परिवेश और आधुनिकता के बढ़ने के कारण मानव द्वारा विकसित किए गए जीवन मूल्य परिवर्तित हो रहें हैं। जिस जीवन मूल्य के लिए मानव अपना सर्वस्व दांव पर लगा देता था वह आज सिर्फ बातों या किताबों तक ही सीमित रह गया है। मनुष्य के व्यवहार में नहीं। इसी साहित्य के माध्यम से हमें मनुष्य के उस खोए हुए जीवन मूल्य को फिर से वापस लाना होगा क्योंकि मनुष्य ही मूल्यों का निर्माता और भोक्ता है।

जब हम मानव मूल्य की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य क्या है, यह समझ लेना आवश्यक है। अपनी परिस्थितियाँ, इतिहास- क्रम और काल-प्रवाह के सन्दर्भ में मनुष्य की स्थिति क्या है और महत्त्व क्या है-वास्तविक समस्या इस बिन्दु से उठती है । समस्त मध्यकाल में इस निखिल सृष्टि और इतिहास-क्रम का नियन्ता किसी मानवोपरि अलौकिक सत्ता को माना जाता था। समस्त मूल्यों का स्रोत्र वही था और मनुष्य की एक मात्र सार्थकता यही थी कि वह अधिक से अधिक उस सत्ता से तादात्म्य स्थापित करने की चेष्टा करे। इतिहास या काल-प्रवाह उसी मानवोपरि सत्ता की सृष्टि था-माया रूप में या लीला रूप में। ज्यों-ज्यों हम आधुनिक युग में प्रवेश करते गये त्यों-त्यों इस मानवोपरि सत्ता का अवमूल्यन होता गया। मनुष्य की गरिमा का नये स्तर पर उदय हुआ और माना जाने लगा कि मनुष्य अपने में स्वतः सार्थक और मूल्यवान् है-वह आन्तरिक शक्तियों से संपन्न, चेतन-स्तर पर अपनी नियति के निर्माण के लिए स्वतः निर्णय लेने वाला प्राणी है। सृष्टि के केन्द्र में मनुष्य है। यह भावना बीच-बीच में मध्यकाल के साधकों या सन्तों में भी कभी-कभी उदित हुई थी, किन्तु आधुनिक युग के पहले यह कभी सर्वमान्य नहीं हो पायी थी। लेकिन जहाँ तक एक ओर सिद्धांतों के स्तर पर मनुष्य की सार्वभौमिक सर्वोपरि सत्ता स्थापित हुई, वहीं भौतिक स्तर पर ऐसी परिस्थितियाँ और व्यवस्थाएँ विकसित होती गयीं तथा उन्होंने ऐसी चिन्तन धाराओं को प्रेरित किया जो प्रकारान्तर से मनुष्य की सार्थकता और मूल्यवत्ता में अविश्वास करती गयीं। बहुधा ऐसी विचारधाराएँ नाम के लिए मानवतावाद के साथ विशिष्ट विशेषण जोड़कर उसका प्रश्रय लेती रही हैं। किन्तुः मूलतः वे मानव की गरिमा को कुण्ठित करने में सहायक हुई हैं और मानव का अवमूल्यन करती गयी हैं।

सांस्कृतिक संकट या मानवीय तत्त्व के विघटन की जो बात बहुधा उठाई जाती रही है उसका तात्पर्य यही है कि वर्तमान युग में ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न हो चुकी हैं जिसमें अपनी नियति के, इतिहास-निर्माण के सूत्र मनुष्य के हाथों से छूटे हुए लगते हैं-मनुष्य दिनोंदिन निरर्थकता की ओर अग्रसर होता प्रतीत होता है। यह संकट केवल आर्थिक या राजनीतिक संकट नहीं है वरन् जीवन के सभी पक्षों में समान रूप से प्रतिफलित हो रहा है। यह संकट केवल पश्चिम या पूर्व का नहीं है वरन् समस्त संसार में विभिन्न धरातलों पर विभिन्न रुपों में प्रकट हो रहा है।

The Perspective
International Journal of Social Science and Humanities
An Online, Peer-Reviewed, Indexed and Refereed Journal, ISSN: 2582-6964
A Quarterly, Bi-Lingual Research Journal Published in English & Hindi
Vol. : 3, Joint Issue : 9-11, February - October, 2022

Research Paper

Importance of the Media Industry to Fulfill Economic Demand and Supply

Dr Kamlesh Meena

Assistant Regional Director
Indira Gandhi National Open University (IGNOU)
Regional Centre Khanna, Ludhiana, Punjab.
Email: kamleshmeena@ignou.ac.in & drkamleshmeena12august@gmail.com

ABSTRACT

In today's increasingly interconnected and globalized world, the media serves as a catalyst for social change. As the field of economics developed, several ideas were disseminated in an effort to make sense of how money is handled and the steps that must be taken to meet consumer and producer demand. The influence of the media has resulted in fast transformations across many areas of society in recent years. By doing a factor analysis, we can isolate the most telling variables to better comprehend how shoppers make decisions. The chi-square test's results are shown by gender.

KEYWORDS: media economics research, market, concentration.

INTRODUCTION

When discussing the financial and commercial aspects of media creation and distribution, the phrase "media economics" is often used. What is produced, how it is produced, and for whom are all key questions in economics. Media economics examines the macro and microeconomic factors of mass media businesses through the lens of economic ideas, concepts, and theories. Publishing, Radio, Television, and Satellite, the Internet, and social media all constitute significant segments of the media landscape. There are now 832 television channels, 245 FM radio stations, 179 community radio stations, and 99,660